क्या भारतीय संस्कृति अथवा विरासत की समझ के बिना भारतीय राष्ट्र-निर्माण संभव था?

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

–मणिकांत सिंह

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की संस्कृति को समझने हेतु जरुरी कुछ मुद्दे

- संस्कृति अथवा विरासत क्या होती है?
- क्या समय के साथ-साथ संस्कृति की अवधारणा बदलती है?
- क्या सभ्यता एवं संस्कृति दोनों एक दूसरे के पर्यायवाची हैं अथवा एक दूसरे से पृथक है?
- संस्कृति की परिधि में कौन-कौन से तत्व शामिल होते हैं?

- प्राचीन भारत की संस्कृति विलक्षण क्यों मानी जाती है इस विलक्षणता को निर्धारित करने वाले कौन से कारक रहे हैं?

- मध्यकाल में तुर्की मुगल तत्व एवं पूर्व भारतीय तत्वों के बीच होने वाले आदान-प्रदान के परिणाम स्वरूप भारत में समन्वित संस्कृति (composite culture) का विकास कैसे हुआ? तथा इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में किस प्रकार हुई?

- ब्रिटिश ने भारतीय संस्कृति एवं धर्म की व्याख्या किस प्रकार की जिससे भारत में अलगाववाद को बल मिला?

- स्वतंत्रता के पश्चात हमारे राष्ट्र निर्माताओं के लिए भारतीय संस्कृति की समझ क्यों आवश्यक हो गई?

- संस्कृति एवं विरासत का मुद्दा विदेश नीति एवं सामाजिक न्याय एवं आंतरिक सुरक्षा के मुद्दे से कैसे जुड़ जाता है?

अंत में सिविल सेवा परीक्षा में जो प्रश्न पूछे जा रहे हैं उनका उत्तर हम किस प्रकार उपर्युक्त मुद्दों के अध्ययन के क्रम में पा सकते हैं?

सामान्यत: संस्कृति शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है-

- परंपरागत अर्थ में संस्कृति से तात्पर्य है कलात्मक सृजन एवं बौद्धिक उपलब्धियां। इस अर्थ में संस्कृति किसी समुदाय के साहित्य, स्थापत्य कला, शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं चित्रकला के रूप में व्यक्त होती हैं। इस अर्थ में संस्कृति एवं विरासत दोनों एक दूसरे के निकट हैं।
- दूसरे अर्थ में संस्कृति शब्द का प्रयोग मानव शास्त्री करते हैं। मानव शास्त्री संस्कृति का अर्थ जनसामान्य की सोच उनके रीति-रिवाज, उनकी मानसिकता तथा उनकी परंपरा के अध्ययन से लगाते हैं।

इसके साथ-साथ दूसरा मुद्दा यह उपस्थित होता है कि यह सभ्यता एवं संस्कृति के बीच क्या संबंध होता है ?

दोनों के बीच संबंधों का प्रश्न दो सन्दर्भों में होता रहा है-

1- प्राचीन काल के संदर्भ में-

संस्कृति किसी खास क्षेत्र में निवास करने वाले समुदाय की जीवन पद्धति (A pattern of life) को व्यक्त करती है परंतु अगर यह जीवन पद्धति एक विस्तृत क्षेत्र में मानदंड (Standard) के रूप में स्थापित हो जाती है तो सभ्यता कहलाती है।

2- वर्तमान संदर्भ में-

- जहाँ सभ्यता बाह्य आवरण को,वहीं संस्कृति आंतरिक गुण को दर्शाती है।
- सामान्यत: सभ्यता का संबंध आभिजात्य तत्व से जोड़ा जाता है, तो वहीं संस्कृति का संबंध लोक तत्व से।
- संस्कृति की परिधि काफी व्यापक होती है । इसमें साहित्य, कला, तकनीकी, धर्म एवं दर्शन , खान-पान, रहन-सहन, जीवन दृष्टिकोण आदि इसमें शामिल होते हैं।
- प्राचीन भारत की संस्कृति की विशेषता है इसका एकल स्वरूप की जगह इसका बहुलवादी स्वरूप (Poliphonic nature) होना।

भारतीय संस्कृति के बहुलवादी स्वरूप (Polyphonic nature) को निर्धारित करने वाले कारक:-

1- <u>भारत की विशेषता भौगोलिक स्थिति-</u> मानचित्र के द्वारा निर्देशित इन विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के खान-पान, रहन-सहन, जीवन पद्धति में अंतर परंतु भौगोलिक अवरोध के बाद भी विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर आदान-प्रदान। इसलिए विविधता में एकता का उदाहरण।

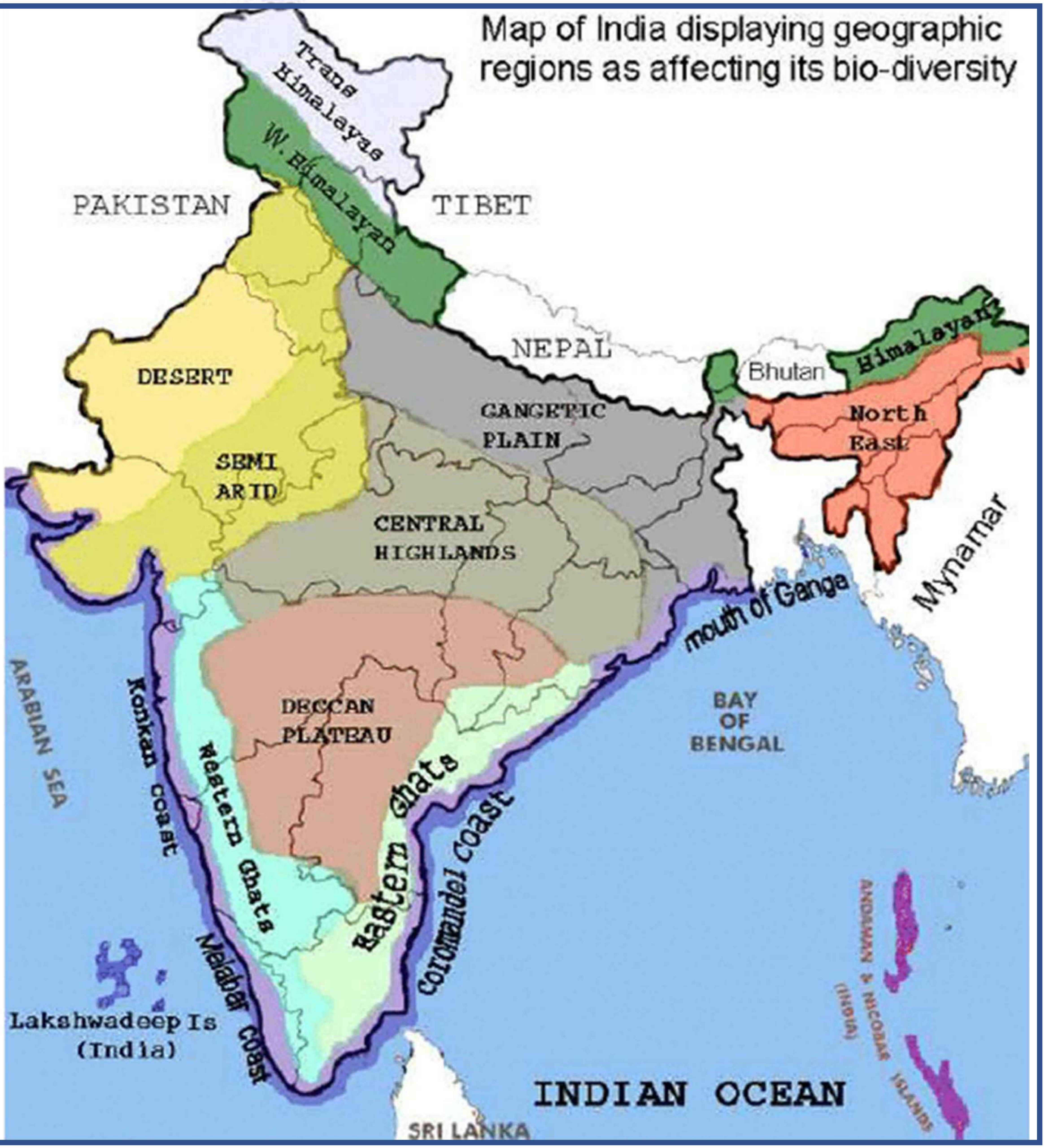

2- भारत में उत्तर पश्चिम से नवीन तत्वों का आगमन यथा- इंडो-ग्रीक,शक, पार्थियन, कुषाण, हूण आदि तथा उनके द्वारा भारतीय संस्कृति का संवर्द्धन एवं संरक्षण।

3- आर्य एवं गैर-आर्य तत्वों के बीच परस्पर संपर्क से धर्म, भाषा, कला सभी क्षेत्र प्रभावित।

4- मौर्योत्तर काल में भूमध्यसागरीय क्षेत्र तथा मध्य एशियाई क्षेत्र (रेशम मार्ग) तथा गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में पूर्वी भारत तथा दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत का सांस्कृतिक आदान-प्रदान।

5- उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के मध्य निरंतर सांस्कृतिक संवाद (cultural comunication)

प्राचीन भारत की संस्कृति का क्रमिक विकास

प्रथम खंड

- पुरापाषाण काल
- मध्य पाषाण काल
- नवपाषाण काल (6000 ई.पूर्व के पश्चात)
- ताम्र पाषाण काल (3500 ई.पूर्व के पश्चात)
- हड़प्पा सभ्यता (2600 ई.पूर्व – 1900 ई.पूर्व)

प्रथम खंड

- तकनीकी परिवर्तन
  - उपकरणों की बनावट
- समाज एवं परिवार की परिकल्पना का विकास
- आसपास के परिवेश से साहचर्य कैसे स्थापित किया? (धर्म का विकास)
- कला की अवधारणा विकसित
- प्रथम नगरीय सभ्यता

- ‘भारत की मध्य पाषाण शिला कला ने केवल इस काल के सांस्कृतिक जीवन बल्कि आधुनिक चित्रकला से तुलनीय परिष्कृत सौंदर्य बोध को भी प्रतिबिंबित करती है।’ इस टिप्पणी का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। (200 शब्द ,2015)
- सिंधु घाटी सभ्यता की नगरीय आयोजना और संस्कृति ने किस सीमा तक वर्तमान युगीन नगरीकरण को निवेश (इनपुट) प्रदान किये हैं? चर्चा कीजिये। (150 शब्द, 2014)

दूसरा खंड

- **वैदिक काल (1500 ई.पूर्व – 600 ई.पूर्व)**
- **बुद्धकाल (600 ई.पूर्व – 400 ई.पूर्व)**
- **मौर्य काल (400 ई.पूर्व – 200 ई.पूर्व)**
- **मौर्योत्तरकाल (200 ई.पूर्व – 300 ई.)**
- **गुप्त काल (300 ई. – 600 ई.)**
- **गुप्तोत्तर काल (600 ई. – 750 ई.)**
- **पूर्व मध्य काल (750 ई. – 1200 ई.)**

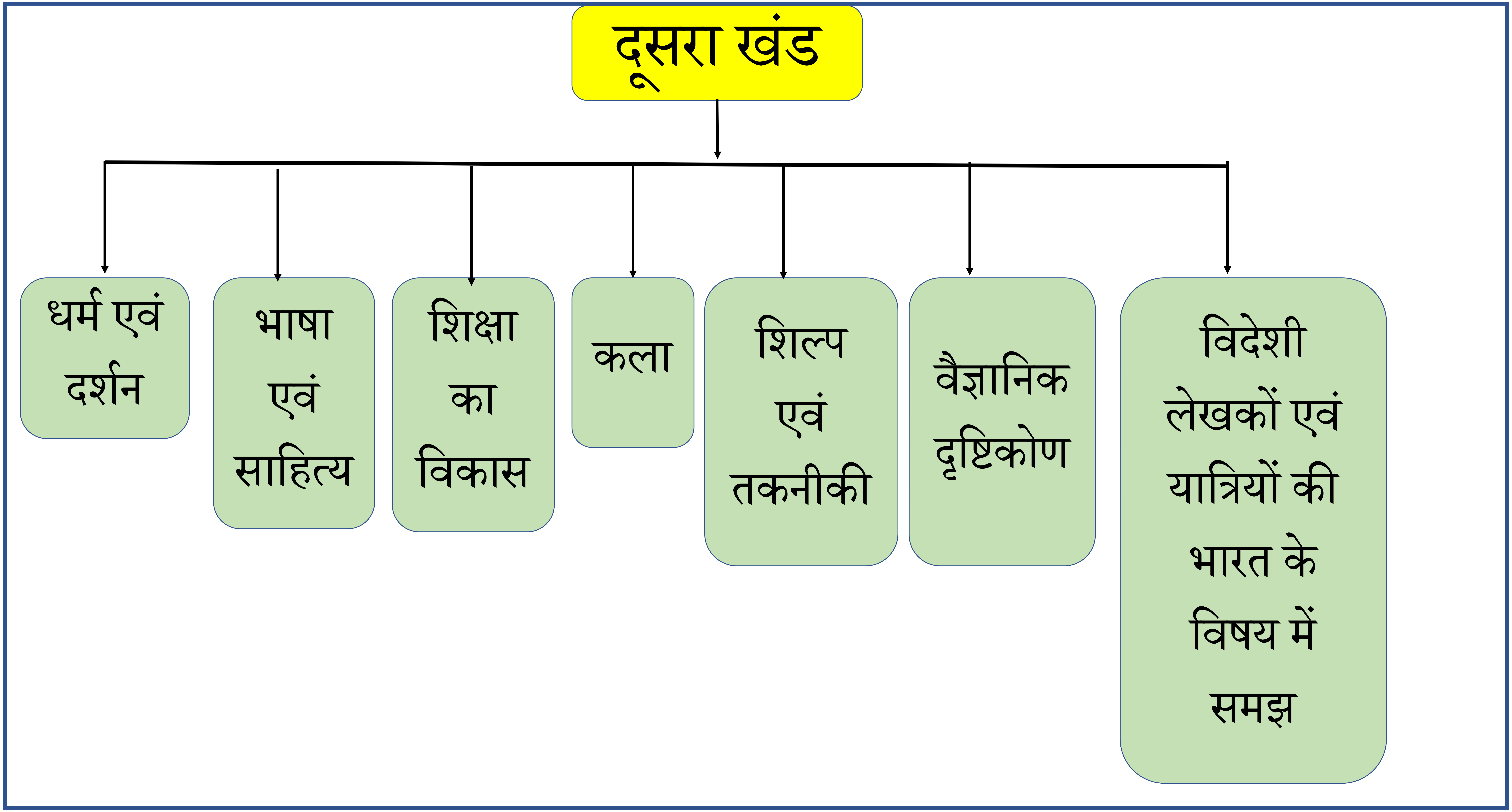
दूसरा खंड
धर्म एवं दर्शन
भाषा एवं साहित्य
शिक्षा का विकास
कला
शिल्प एवं तकनीकी
वैज्ञानिक दृष्टिकोण
विदेशी लेखकों एवं यात्रियों की भारत के विषय में समझ

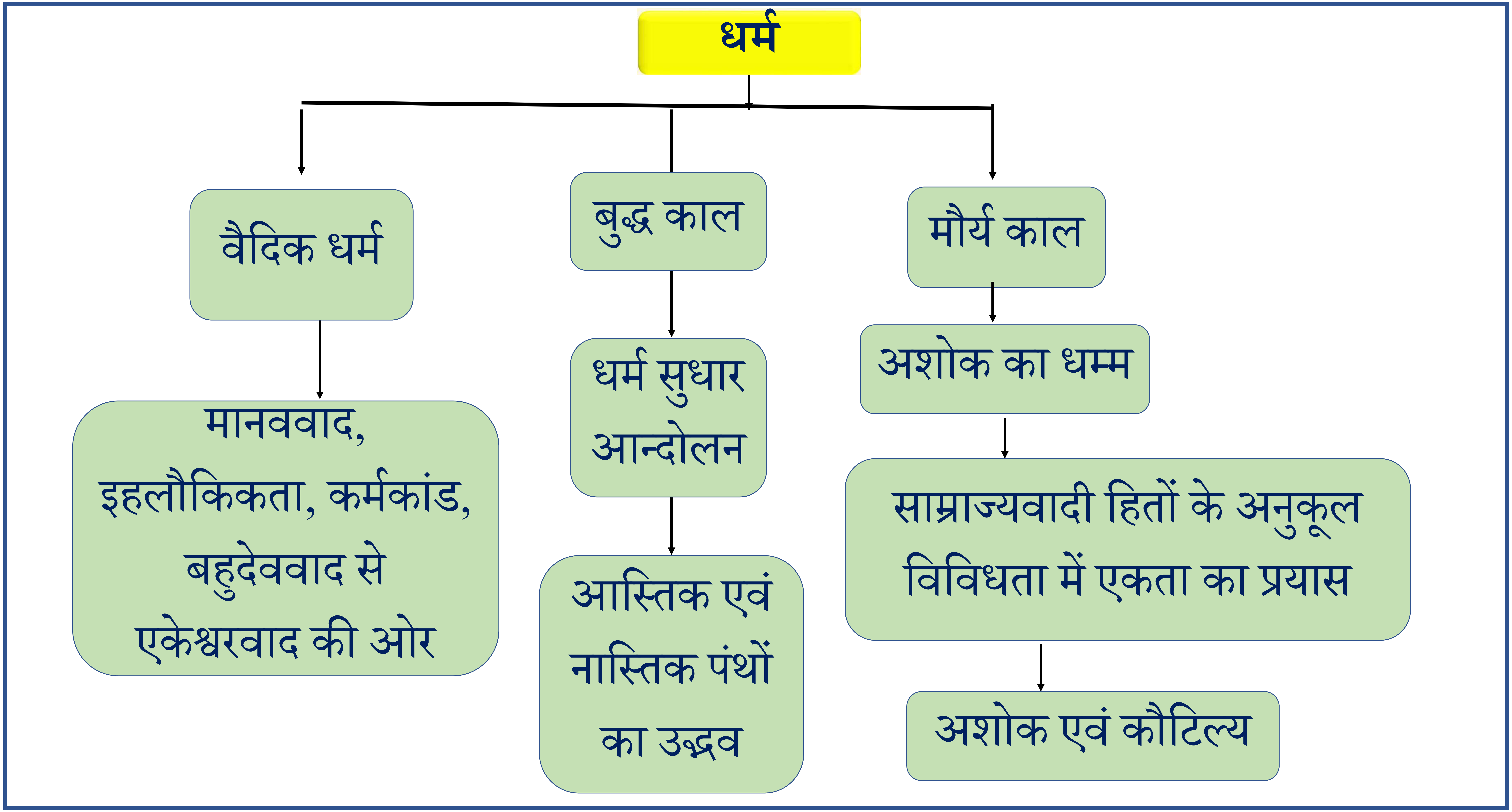

धर्म
वैदिक धर्म
मानववाद, इहलौकिकता, कर्मकांड, बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की ओर
बुद्ध काल
धर्म सुधार आन्दोलन
आस्तिक एवं नास्तिक पंथों का उद्भव
मौर्य काल
अशोक का धम्म
साम्राज्यवादी हितों के अनुकूल विविधता में एकता का प्रयास
अशोक एवं कौटिल्य

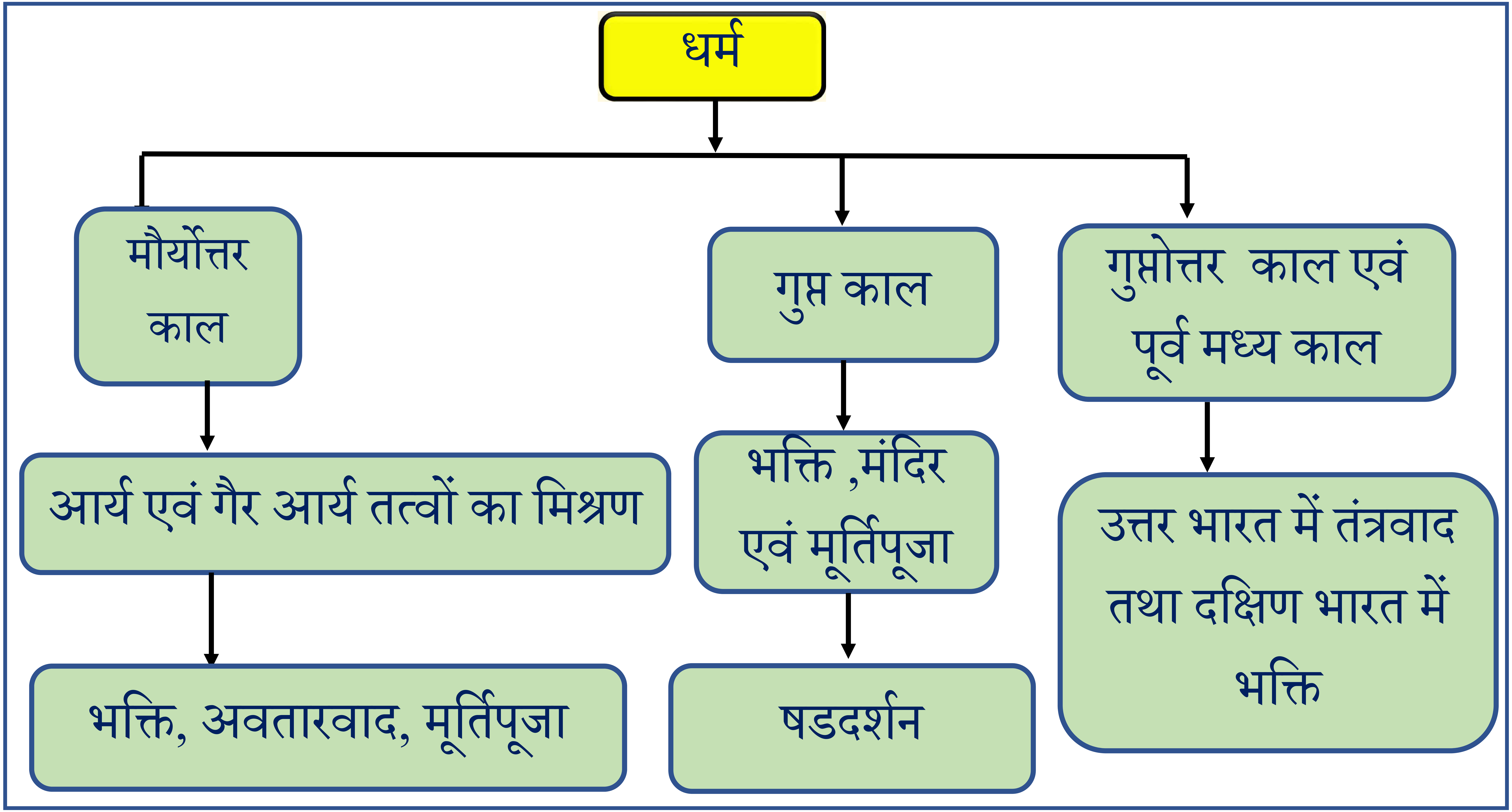
धर्म
मौर्योत्तर काल
गुप्त काल
गुप्तोत्तर काल एवं पूर्व मध्य काल
आर्य एवं गैर आर्य तत्वों का मिश्रण
भक्ति ,मंदिर एवं मूर्तिपूजा
उत्तर भारत में तंत्रवाद तथा दक्षिण भारत में भक्ति
भक्ति, अवतारवाद, मूर्तिपूजा
षडदर्शन

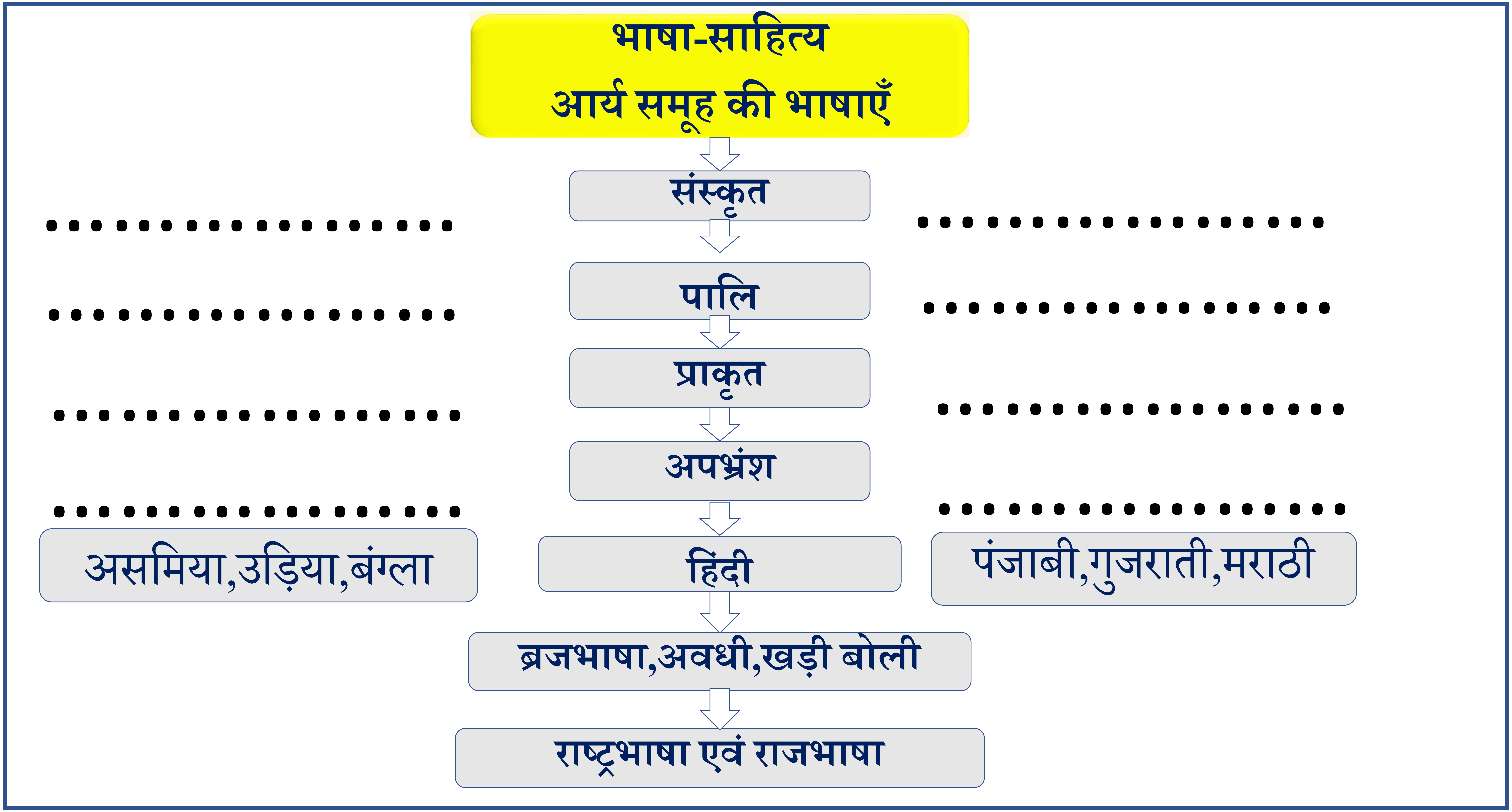
भाषा-साहित्य
आर्य समूह की भाषाएँ
संस्कृत
पालि
प्राकृत
अपभ्रंश
हिंदी
असमिया,उड़िया,बंग्ला
पंजाबी,गुजराती,मराठी
ब्रजभाषा,अवधी,खड़ी बोली
राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा

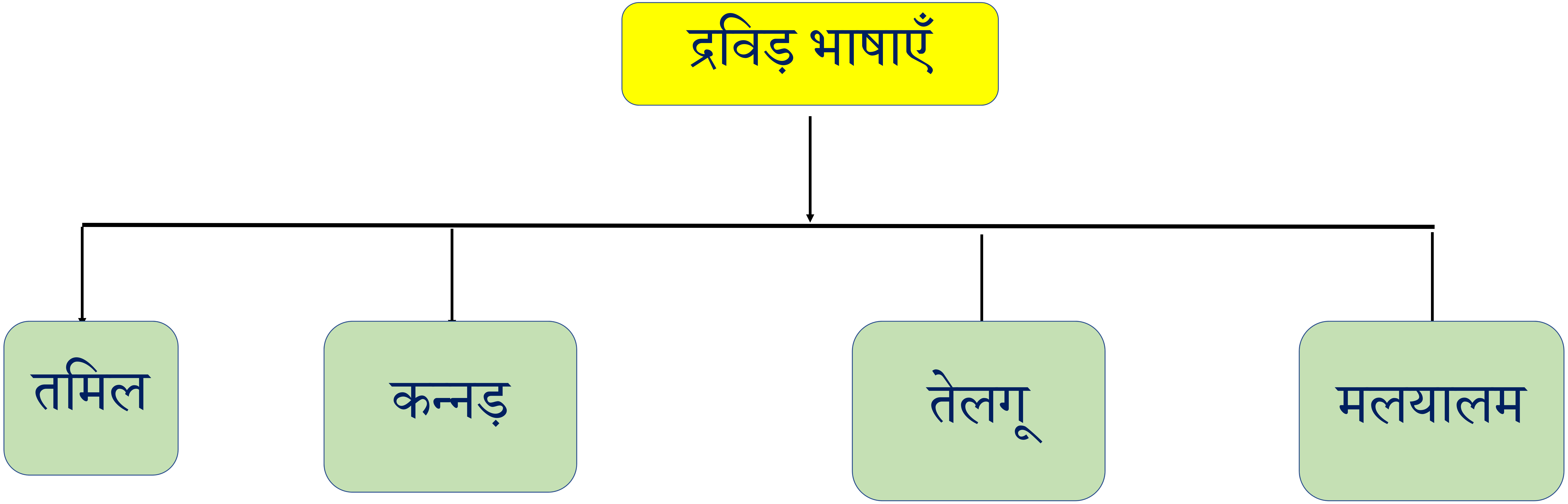
द्रविड़ भाषाएँ
तमिल
कन्नड़
तेलगू
मलयालम

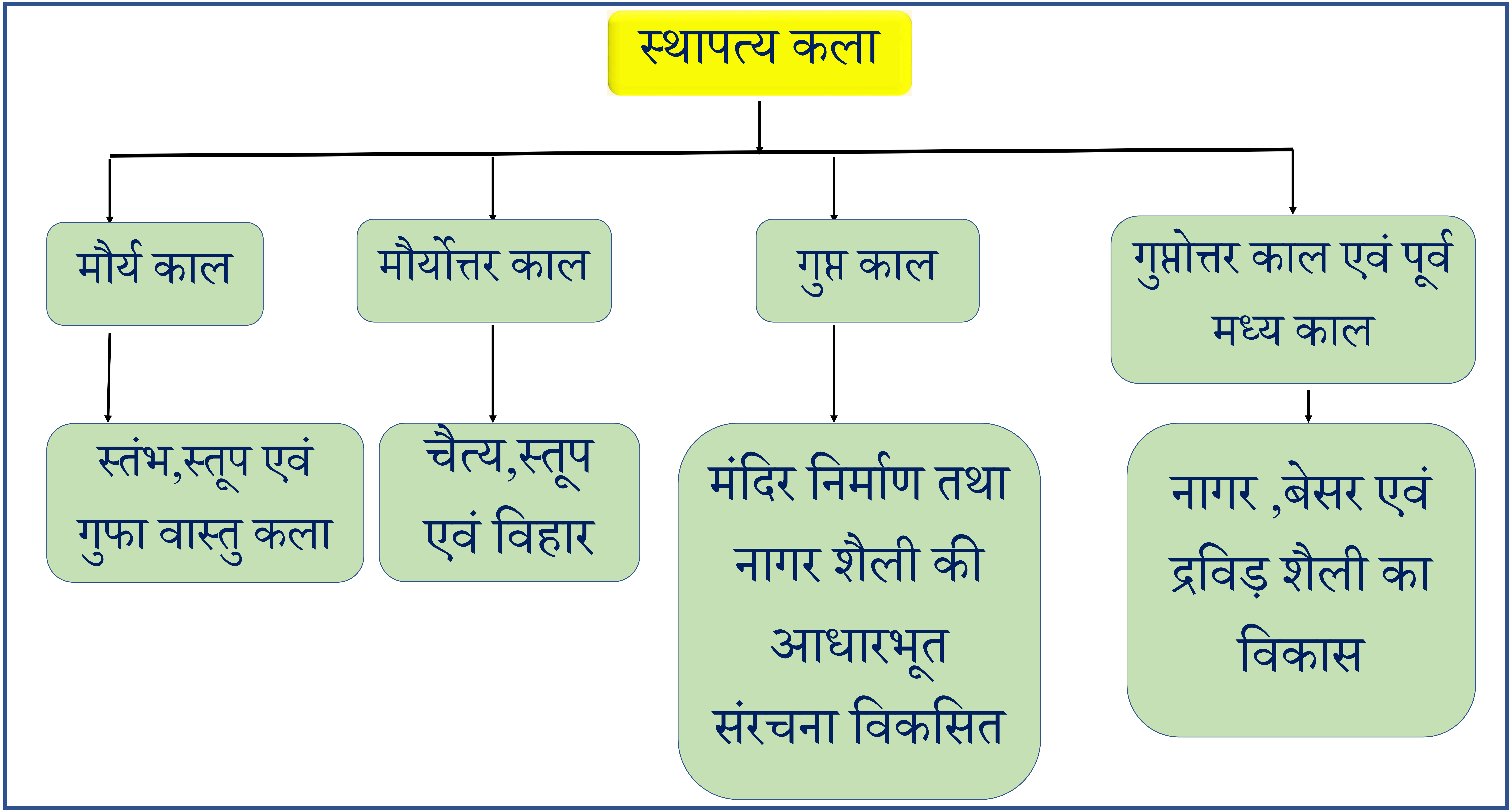
स्थापत्य कला
मौर्य काल
मौर्योत्तर काल
गुप्त काल
गुप्तोत्तर काल एवं पूर्व मध्य काल
स्तंभ,स्तूप एवं गुफा वास्तु कला
चैत्य,स्तूप एवं विहार
मंदिर निर्माण तथा नागर शैली की आधारभूत संरचना विकसित
नागर ,बेसर एवं द्रविड़ शैली का विकास

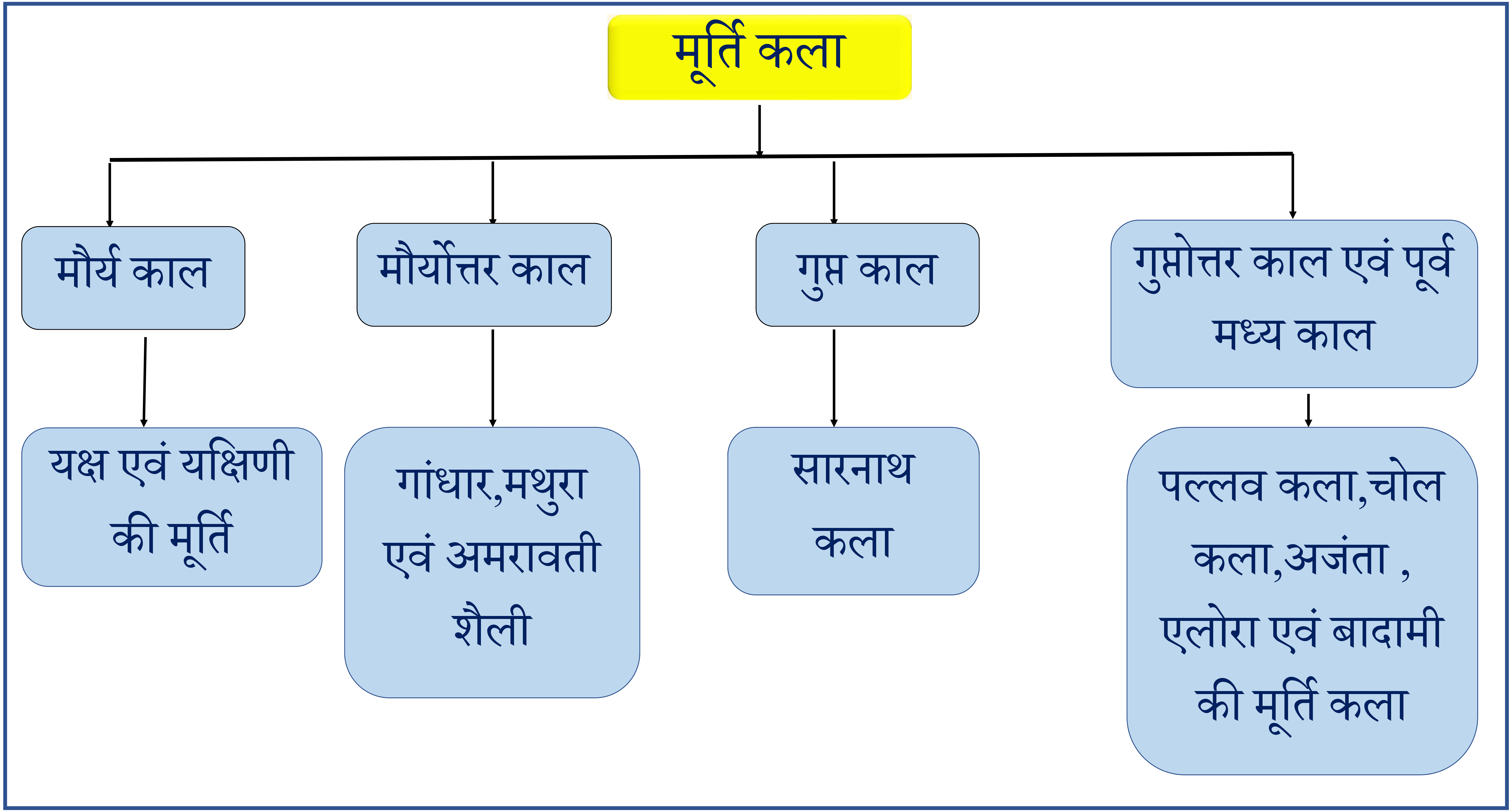
मूर्ति कला
मौर्य काल
मौर्योत्तर काल
गुप्त काल
गुप्तोत्तर काल एवं पूर्व मध्य काल
यक्ष एवं यक्षिणी की मूर्ति
गांधार,मथुरा एवं अमरावती शैली
सारनाथ कला
पल्लव कला,चोल कला,अजंता , एलोरा एवं बादामी की मूर्ति कला

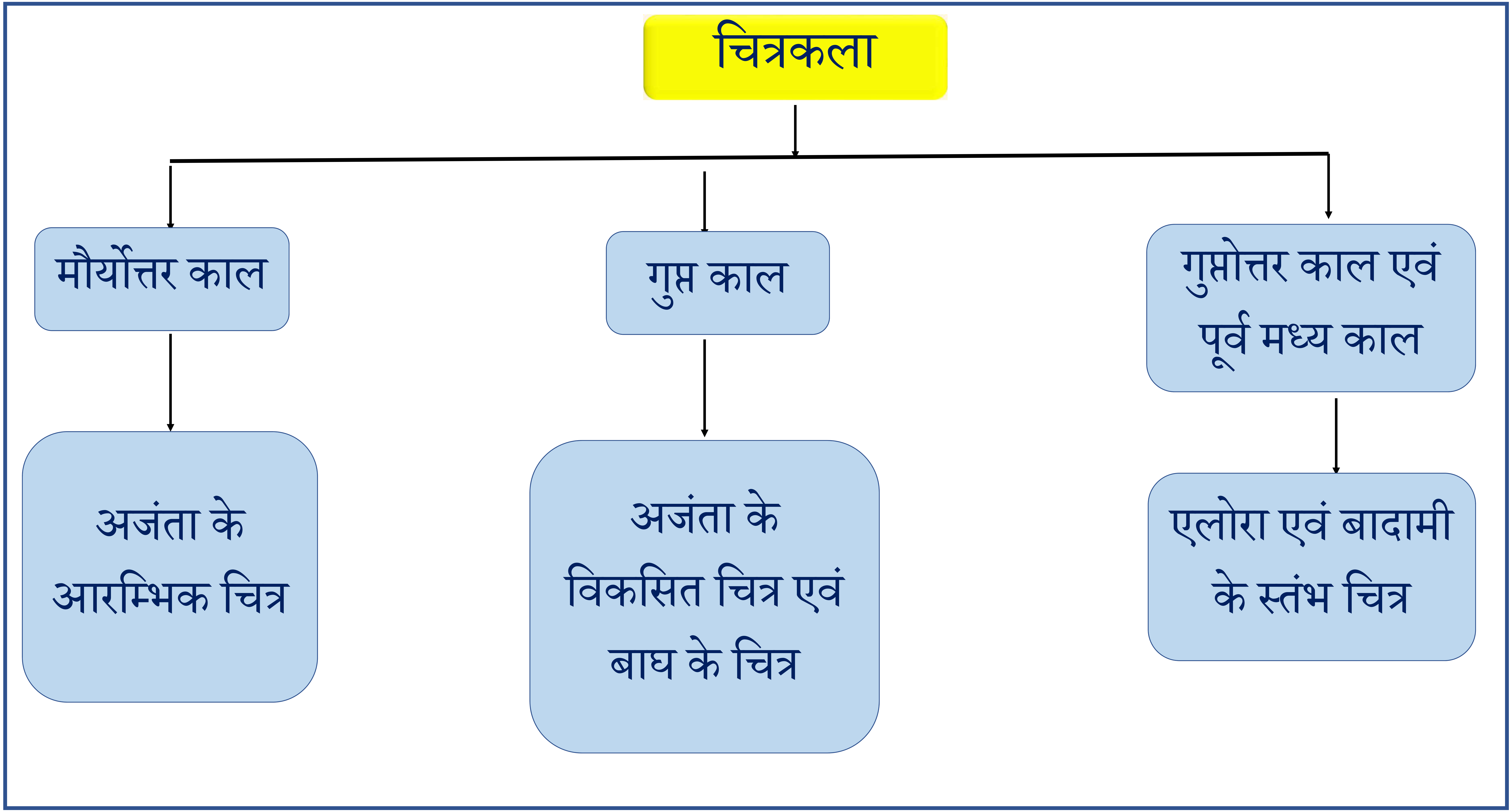
चित्रकला
मौर्योत्तर काल
गुप्त काल
गुप्तोत्तर काल एवं पूर्व मध्य काल
अजंता के आरम्भिक चित्र
अजंता के विकसित चित्र एवं बाघ के चित्र
एलोरा एवं बादामी के स्तंभ चित्र

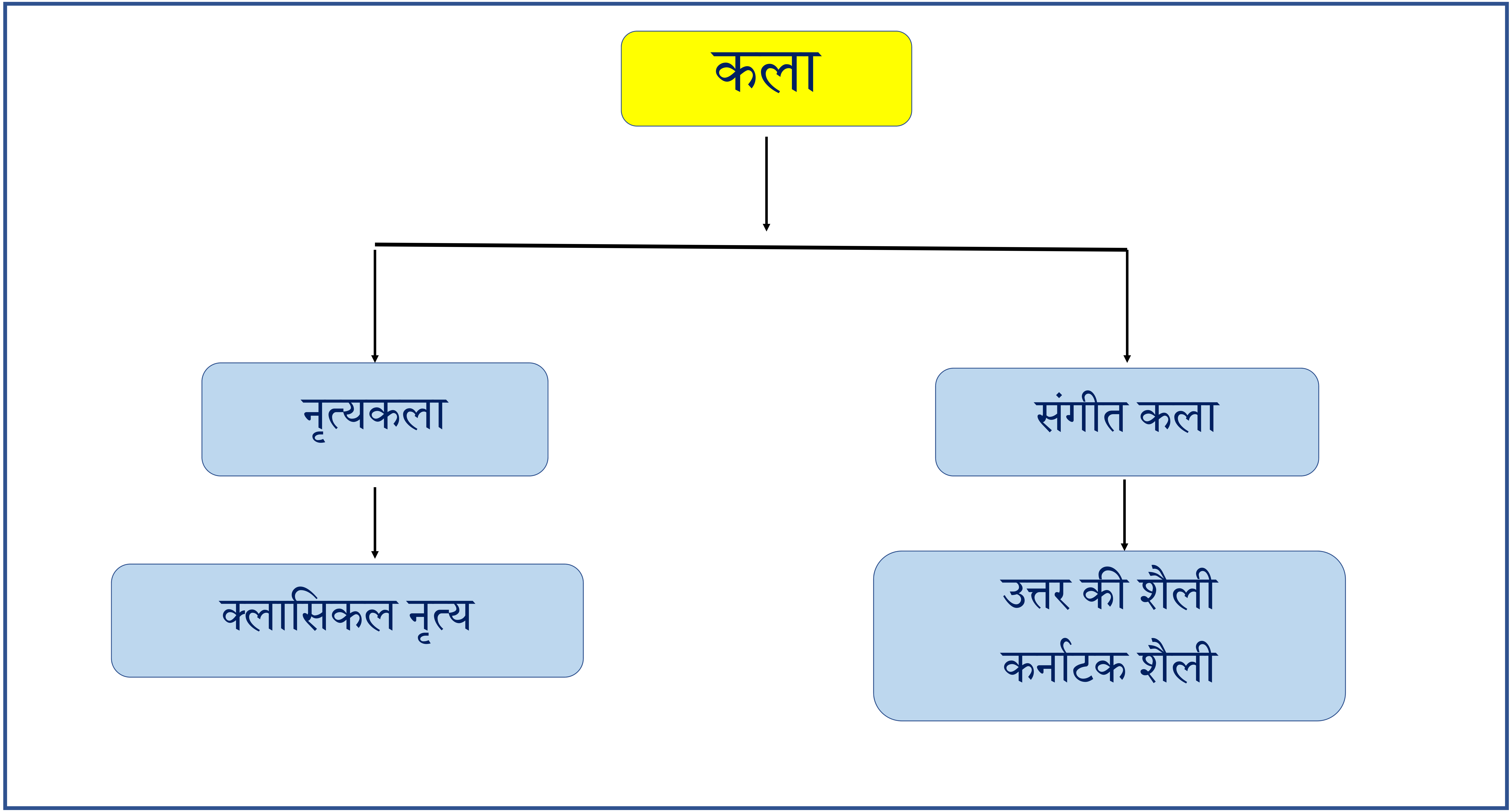
कला
नृत्यकला
संगीत कला
क्लासिकल नृत्य
उत्तर की शैली
कर्नाटक शैली

शिक्षा
ब्राम्हणवादी शिक्षा
बौद्ध
जैन
बिहार (लोकशिक्षा एवं शिल्प)
नालंदा,वल्लभी, विक्रमशिला विश्वविद्यालय
बिहार
पुस्तकालय
महादान (विद्यादान)
गुरुकुल
मंदिर(घटिका)
ब्रम्ह्देय अथवा अग्रहार
महाविद्यालय
संगोष्टी

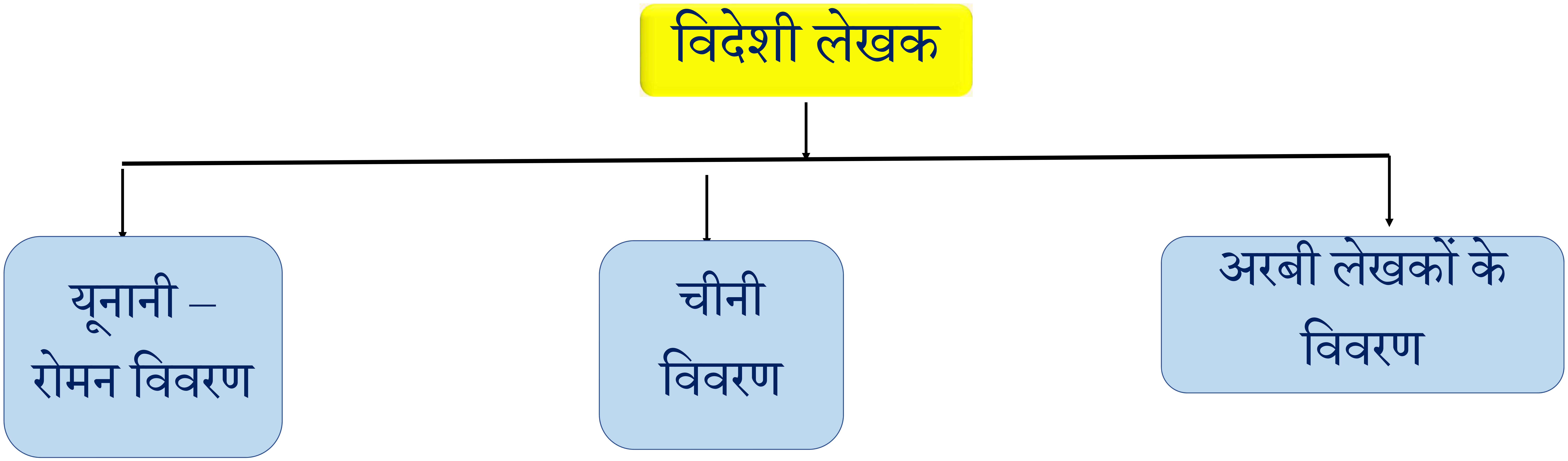
विदेशी लेखक
यूनानी – रोमन विवरण
चीनी विवरण
अरबी लेखकों के विवरण

UPSC में पूंछे गए प्रश्न

- भारतीय कला विरासत का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये।(200 शब्द,2018)
- प्रारंभिक बौद्ध स्तूप कला लोक वर्ण्य विषयों एवं कथानकों को चित्रित करते हुए बौद्ध आदर्शों की सफलतापूर्वक व्याख्या करती है। विशदीकरण कीजिये। (200 शब्द, 2016)
- भारत के इतिहास की पुनर्स्थापना में चीनी और अरबी यात्रियों के वृत्तांतों के महत्व का आकलन कीजिये। (150 शब्द, 2018)

UPSC में पूंछे गए प्रश्न

- तक्षशिला विश्वविद्यालय विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक था जिसके साथ विभिन्न शिक्षण विषयों के (डिसिप्लिनस) अनेक विख्यात विद्वान व्यक्तित्व संबंधित थे। उसकी रणनीतिक अवस्थिति के कारण उसकी कीर्ति फैली लेकिन नालंदा के विपरीत उसे आधुनिक अभिप्राय में विश्वविद्यालय नहीं समझा जाता। (150 शब्द, 2014)
- गांधार मूर्तिकला रोमन वासियों की उतनी ही ऋणी थी जितनी कि वह यूनानियों की थी। स्पष्ट कीजिए।(150 शब्द, 2014)
- गांधार कला में मध्य एशियाई एवं यूनानी- बैक्ट्रियाई तत्वों को उजागर कीजिये (150 शब्द,2019)

UPSC में पूंछे गए प्रश्न

- दक्षिण भारत के राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से अधिक उपयोगी ना होते हुए भी संगम साहित्य उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अत्यंत प्रभावी शैली में वर्णन करता है। टिप्पणी कीजिए। (200 शब्द, 2018)
- मंदिर वास्तुकला के विकास में चोल वास्तुकला का उच्च स्थान है। विवेचना कीजिये। (100 शब्द, 2013)

अरब क्षेत्र में इस्लाम का उद्भव तथा पूरब एवं दक्षिण की ओर उसका प्रसार

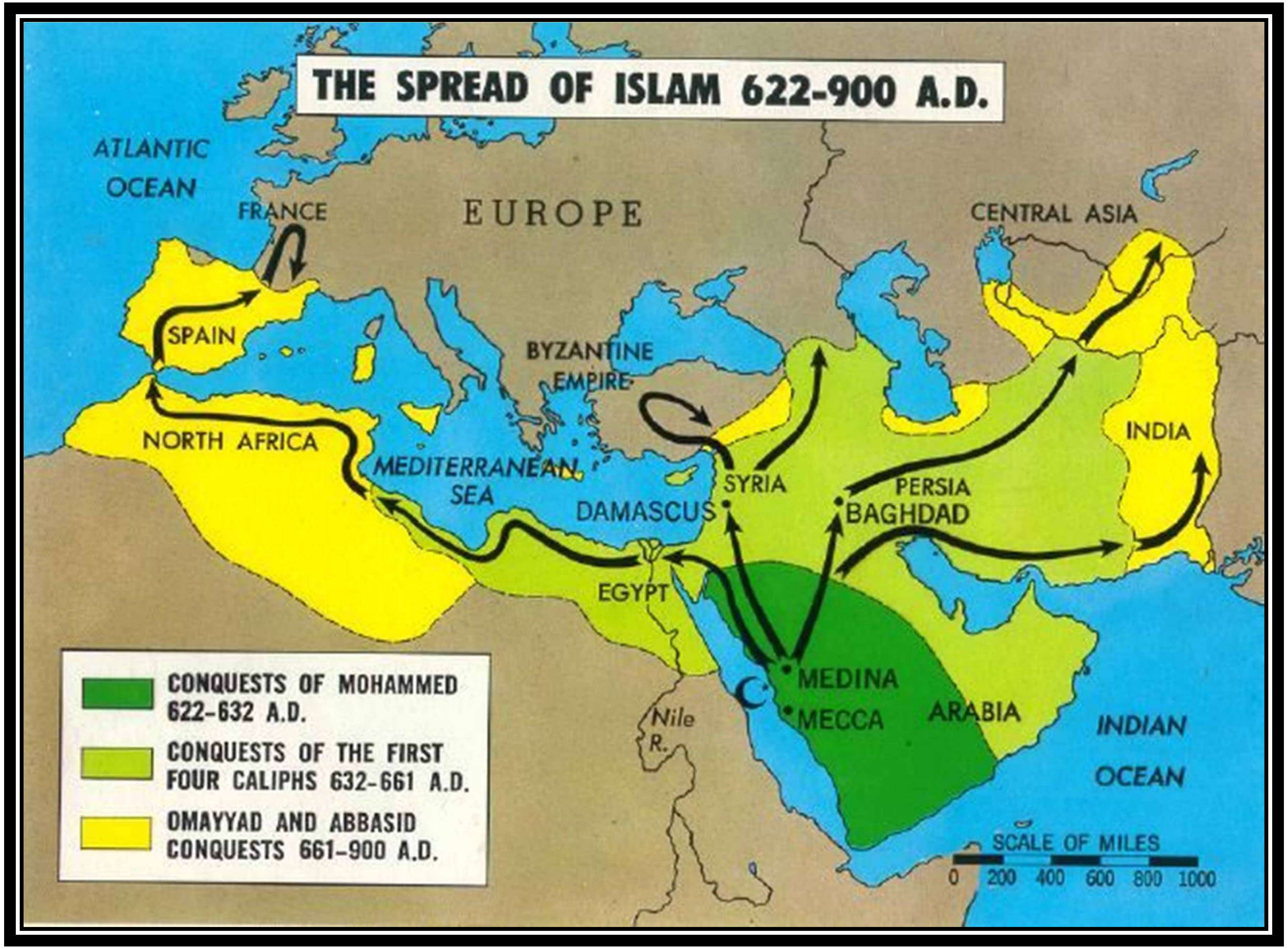
THE SPREAD OF ISLAM 622-900 A.D.
ATLANTIC OCEAN
FRANCE
EUROPE
CENTRAL ASIA
SPAIN
BYZANTINE EMPIRE
NORTH AFRICA
INDIA
MEDITERRANEAN SEA
SYRIA
PERSIA
DAMASCUS
BAGHDAD
EGYPT
MEDINA
MECCA
ARABIA
Nile R.
INDIAN OCEAN
CONQUESTS OF MOHAMMED 622-632 A.D.
CONQUESTS OF THE FIRST FOUR CALIPHS 632-661 A.D.
OMAYYAD AND ABBASID CONQUESTS 661-900 A.D.
SCALE OF MILES
0 200 400 600 800 1000

- प्रसार के क्रम में इस्लाम का अन्य पुरानी सभ्यताओं के संपर्क में आना, यथा मिस्र, सीरिया, ईरान आदि । एक तरफ इस्लाम ने इन क्षेत्रों को जीत लिया,दूसरी तरफ उनकी संस्कृति को अपनाया । अतः अरबी भाषा के समानांतर फारसी भाषा का महत्व।
- पूरब एवं दक्षिण की ओर प्रसार के क्रम में गैर-अरब समुदाय-मध्य एशियाई तुर्क एवं मंगोलो के द्वारा इस्लाम को अपनाया जाना। अतः इस्लामी व्यवस्था एक ग्लोबल पद्धति के रूप में ढलने लगी।
- हिंदुस्तान विजय की आरंभिक प्रयास अरब के मुसलमानों के द्वारा परन्तु वास्तविक सफलता तुर्कों को मिली तथा फिर मुहम्मद गोरी के अधीन तुर्की शासन की स्थापना।

- <u>भारत में इस्लाम एवं हिंदूवादी मॉडल के बीच तक आदान-प्रदान</u>
- इस्लाम तथा तथाकथित हिंदू धर्म दोनों अपने स्वरूप में सर्वग्रासी (All-inclusive) रहे थे। दोनों धर्मं विरोधी पंथों एवं मतों को अपने में समाहित करते आ रहे थे परंतु हिंदुस्तान की भूमि पर दोनों में से कोई किसी को निगल नहीं सके , किन्तु साथ-साथ रहते हुए दोनों ने समन्वित संस्कृति (Composite Culture) का विकास किया। यह समन्वित संस्कृति विविध क्षेत्रों में व्यक्त हुई।
- इसे हम आगे एक डायग्राम के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं -

▪ समन्वित संस्कृति के विकास के तीन चरण –

1- सल्तनत काल (1192-1526)- इलबरी वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश एवं लोदी वंश-इन के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में इस्लामी एवं भारतीय तत्व के बीच सामंजस्य को प्रोत्साहन।

2- प्रांतीय राज्य- दिल्ली सल्तनत के विघटन के पश्चात प्रांतीय राज्यों का उद्भव हुआ यथा- बंगाल, गुजरात, जौनपुर, बहमनी राज्य, विजयनगर राज्य। इन सभी की कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में बड़ा योगदान।

3- मुस्लिम शासकों के द्वारा क्षेत्रीय भाषा एवं स्थापत्य को संरक्षण इस कारण इस्लाम का न केवल भारतीयकरण हुआ बल्कि क्षेत्रीयकरण भी हुआ।

3- मुगल काल (1526 के पश्चात) –

- मुगल काल समन्वित संस्कृति के विकास के सर्वोच्च चरण को दर्शाता है। इस काल में भारत में हिंदुस्तानी संस्कृति का विकास हुआ।
- मुगलों के द्वारा न केवल इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला अपितु 'ध्रुपद' गायकी एवं 'कत्थक' नृत्य को संरक्षण दिया गया। आज भी मुगल स्थापत्य **भारतीय पर्यटन** का चेहरा।

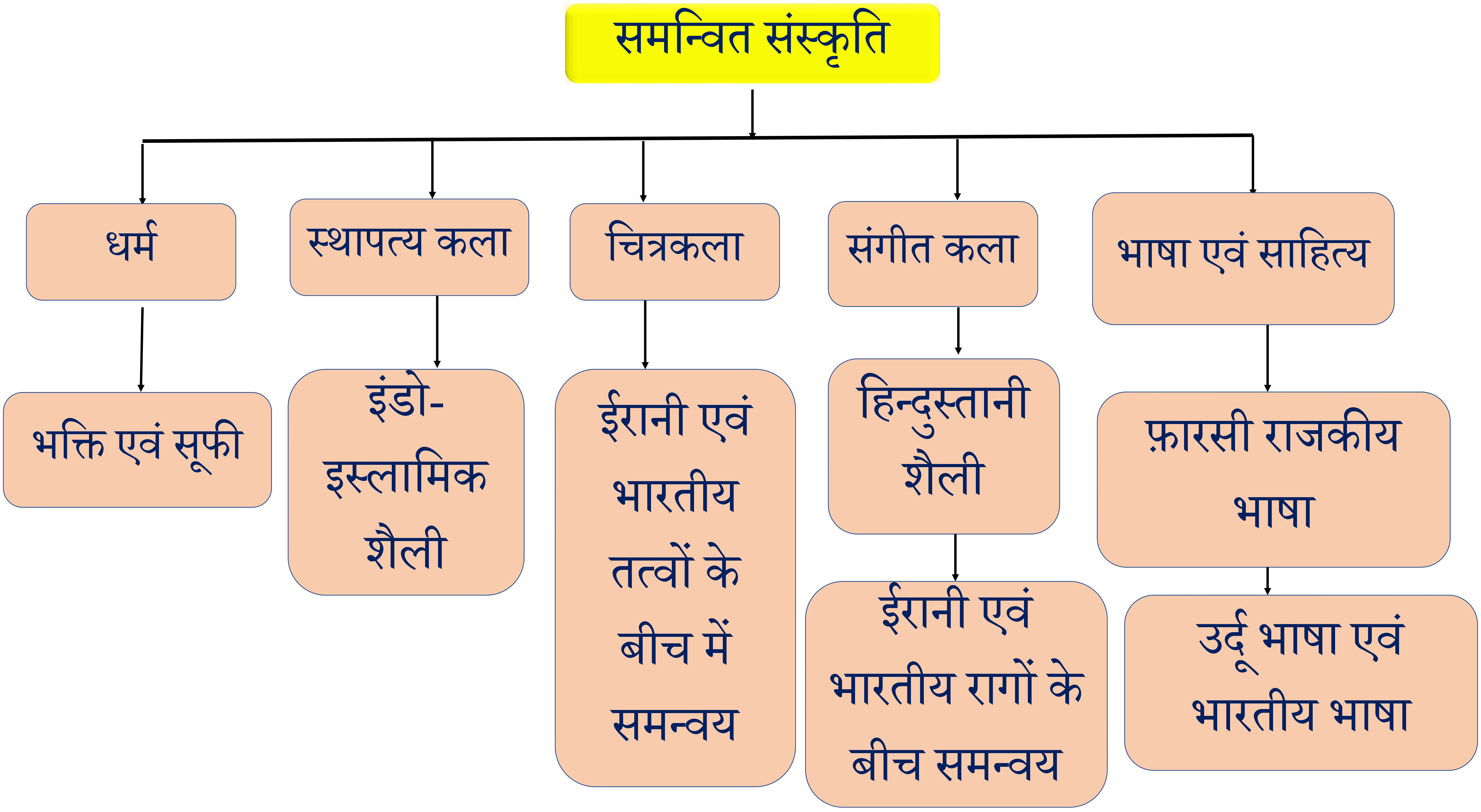
समन्वित संस्कृति
धर्म
स्थापत्य कला
चित्रकला
संगीत कला
भाषा एवं साहित्य
भक्ति एवं सूफी
इंडो-इस्लामिक शैली
ईरानी एवं भारतीय तत्वों के बीच में समन्वय
हिन्दुस्तानी शैली
ईरानी एवं भारतीय रागों के बीच समन्वय
फ़ारसी राजकीय भाषा
उर्दू भाषा एवं भारतीय भाषा

UPSC में पूंछे गए प्रश्न

1. सूफी एवं मध्यकालीन रहस्यवादी सिद्ध पुरुष (संत) हिंदू-मुसलमान समाजों के धार्मिक विचार और रीतियों को या उनकी बाह्य संरचना को पर्याप्त सीमा तक रूपांतरित करने में विफल रहे। टिप्पणी कीजिए। (150 शब्द,2016)

2. विजयनगर नरेश कृष्णदेव राय न केवल एक कुशल विद्वान थे अपितु विद्या एवं साहित्य के महान संरक्षक थे। (200 शब्द, 2016)

UPSC में पूंछे गए प्रश्न

3. भारत की प्राचीन सभ्यता, मिस्र, मेसोपोटामिया और ग्रीस की सभ्यताओं से इस बात में भिन्न है कि भारतीय उपमहाद्वीप की परंपराएं आज तक भंग हुए बिना परिरक्षित की गई। टिप्पणी कीजिए। (200 शब्द, 2015)

4. श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन से भक्ति को एक असाधारण नयी दिशा मिली थी। चर्चा कीजिये।(250 शब्द, 2018)

आधुनिक काल में भारतीय संस्कृति

- 18वीं सदी में ब्रिटिश शासन की स्थापना के काल में भारत में स्थापित संस्कृति हिंदुस्तानी संस्कृति थी ।

- फारसी की जगह उर्दू ,हिंदुस्तान की राजभाषा के रूप में स्थापित थी। गायकी के क्षेत्र में ‘ध्रुपद’ एवं ‘ख्याल’ की जगह गजल पर बल दिया गया था।

- 1857 के महाविद्रोह में ब्रिटिश के विरुद्ध हिंदू एवं मुस्लिम दोनों ने मिलकर संघर्ष किया था।

परंतु निम्नलिखित कारणों से अलगाववाद को प्रोत्साहन मिलाः-

1- ब्रिटिश के द्वारा भारतीय संस्कृति की संकीर्ण व्याख्या-

- कुछ हद तक अपनी नासमझी के कारण तथा कुछ हद तक सोची-समझी नीति के तहत ब्रिटिश ने भारतीय संस्कृति की संकीर्ण व्याख्या प्रस्तुत की।
- उन्होंने भारतीय समाज का मूल आधार धर्म को माना तथा संस्कृति की व्याख्या धर्म के संदर्भ में की।
- ब्रिटिश ने धर्म को आधार बनाकर जितने भी गैर-मुस्लिम, गैर-इसाई, गैर-पारसी थे उन्हें हिंदू संप्रदाय का नाम देकर उसे एक पृथक समुदाय के रूप में स्थापित कर दिया।

2- सर सैयद अहमद खान जैसे मुस्लिम नेताओं की अवसरवादी नीति जिसके तहत उन्होंने मुस्लिम संप्रदायिक उत्थान के लिए ब्रिटिश कृपा को आवश्यक माना।

3- मुहम्मद अली जिन्ना जैसे नेता के द्वारा धर्म को आधार बनाकर यह घोषित करना कि हिंदू एवं मुसलमान दोनों दो राष्ट्र हैं। यह व्याख्या तार्किक नहीं।

4- जवाब में कुछ उग्र हिंदू विचारको के द्वारा सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा प्रदान करना। इसके तहत यह घोषित किया जाना कि एक भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले लोग भी एक सामान राष्ट्र के नहीं हो सकते अगर उनका जन्म स्थल एवं तीर्थ स्थल दोनों संबंधित क्षेत्र में नहीं है **बहुसंख्यकवाद ने अल्पसंख्यकों के भय को और भी बढ़ा दिया।** फिर कुछ आंतरिक एवं बाह्य कारणों से भारत का विभाजन हो गया।

स्वतान्त्र्योत्तर भारत में राष्ट्र-निर्माण की चुनौती-

- सामान्यतः लोग ऐसा मानते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने गांधीवादी सत्याग्रह आंदोलन के रूप में औपनिवेशिक प्रतिरोध का एक मॉडल दिया है परंतु लोग इस बात को नजरअंदाज कर देते हैं कि भारत ने विश्व के समक्ष राष्ट्र निर्माण की भी मिसाल रखी थी।

राष्ट्र निर्माण का पश्चिम मॉडल:

1. सीमित भौगोलिक आकार
2. सांस्कृतिक एकरूपता

भारत के समक्ष चुनौती-

1. **विशाल आकार**
2. **व्यापक सांस्कृतिक विविधता**

1888 में एक भारत में कार्यरत एक ब्रिटिश अधिकारी जॉन स्ट्रैची तथा स्वतंत्रता से ठीक पूर्व विंस्टन चर्चिल ने भी भारत के राष्ट्र बनने की क्षमता में अविश्वास प्रकट किया था।

भारतीय राष्ट्रवादियों का समझौतावादी रुख-

- हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करना, परन्तु विरोध की स्थिति में सह राजभाषा के रूप में अंग्रेजी की स्वीकृति।
- एक अंग्रेजी भाषा के आधार पर ब्रिटेन, फ्रेंच, भाषा के आधार पर फ्रांस तथा जर्मन भाषा के आधार पर जर्मन राष्ट्र का निर्माण हुआ परंतु भारतीय संविधान के निर्माताओं ने आठवीं अनुसूची में 14 भाषाओं को राष्ट्रभाषा के रूप में शामिल किया। (वर्तमान में उनकी संख्या 22)

- आंम्भ में भारत की सरकार ने भाषायी राज्यों के निर्माण को अस्वीकार कर दिया था, परन्तु जन-आन्दोलन के दबाव में उन्हें उसे स्वीकार करना पड़ा। फिर 1956 में भाषाई आधार पर 14 राज्यों एवं 6 केन्द्रशासित राज्यों का गठन किया गया।
- धार्मिक एवं भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों को भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार(अनु.25-अनु.30) के प्रावधानों में शामिल करना।
- आगे 42वें संविधान संशोधन के आधार पर –

  a- प्रस्तावना में ‘धर्मनिरपेक्षता’ शब्द को जोड़ा गया

  b- अनुच्छेद 51 A (F)- भारत की सामासिक संस्कृति (composite culture) का संवर्धन

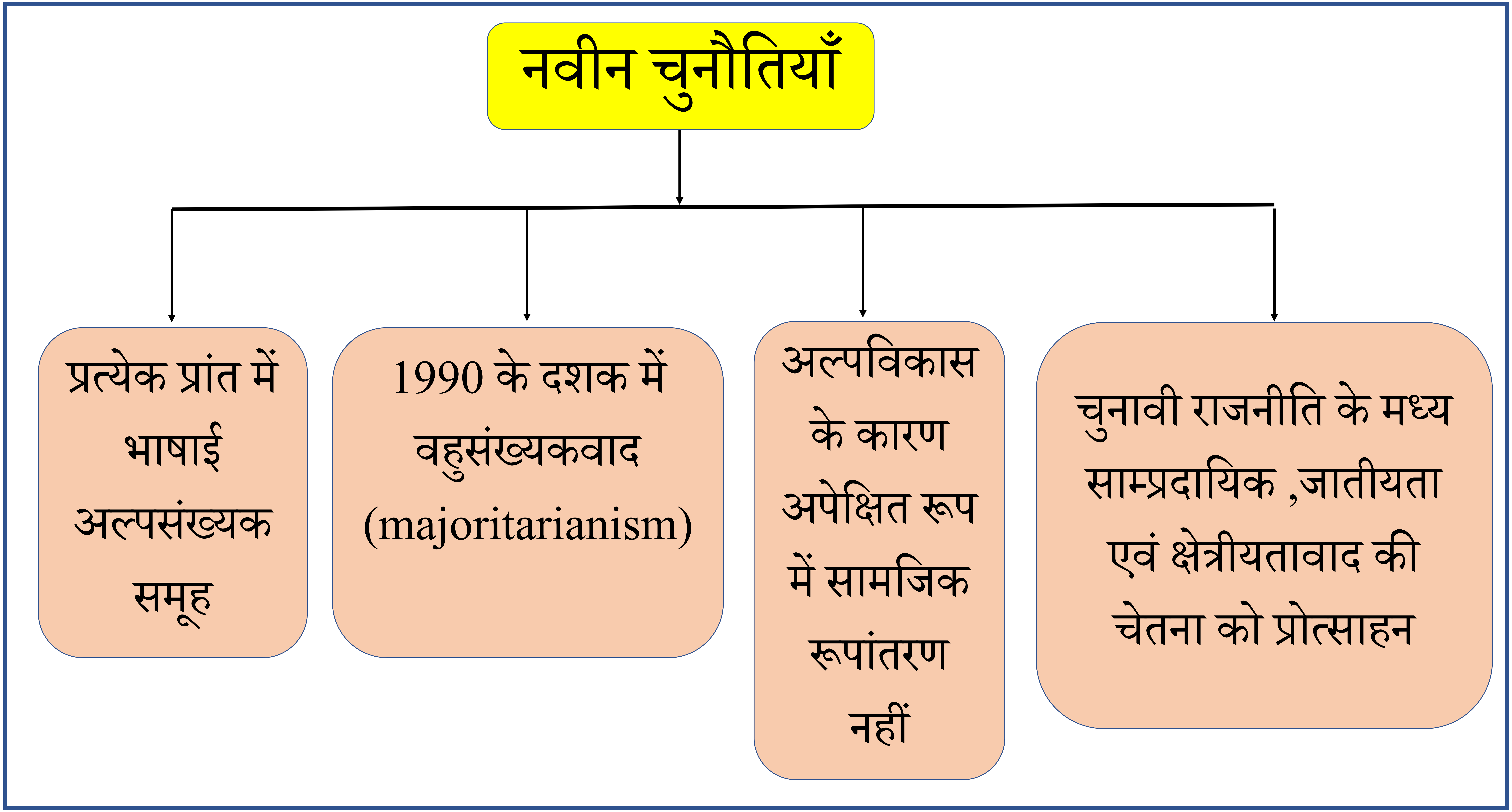
नवीन चुनौतियाँ
प्रत्येक प्रांत में भाषाई अल्पसंख्यक समूह
1990 के दशक में वहुसंख्यकवाद (majoritarianism)
अल्पविकास के कारण अपेक्षित रूप में सामजिक रूपांतरण नहीं
चुनावी राजनीति के मध्य साम्प्रदायिक ,जातीयता एवं क्षेत्रीयतावाद की चेतना को प्रोत्साहन

UPSC में पूंछे गए प्रश्न

1. भारत की विविधता के सन्दर्भ में क्या यह कहा जा सकता है कि राज्यों की अपेक्षा प्रदेश सांकृतिक इकाइयों को रूप प्रदान करते हैं ? अपने दृष्टिकोण के लिए उदाहरणों सहित कारण बताइए। (150 शब्द, 2017)
2. सहिष्णुता एवं प्रेम की भावना न केवल अति प्राचीन समय से ही भारतीय समाज का एक रोचक अभिलक्षण रही है, अपितु वर्तमान में भी यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।सविस्तार स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द, 2017)
3. धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हमारी सांस्कृतिक प्रथाओं के सामने क्या-क्या चुनौतियाँ हैं? (150 शब्द, 2019)
4. क्या हमारे राष्ट्र में सर्वत्र लघु भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र हैं? उदाहरणों के साथ सविस्तार स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द, 2019)

END